संवाद में इस बार तीन अवलोकन टिप्पणियां दी जा रही हैं जिनमें अवलोकन कर्ताओं की स्थितियों के प्रति गहरी संलग्नता और गंभीर चिंता व्यक्त है । ये टिप्पणियां विद्यालय, शिक्षक और बच्चों की स्थितियों-मन: स्थितियों के तीन वृतान्तों के बहाने शिक्षा-परिदृश्य के चरित्र को खोलने के लिए प्रयत्नशील नजर आती हैं। संवाद का यह क्रम अनवरत जारी रहेगा ।

बच्चे और भ्रमण

❑ कमलेशचन्द्र जोशी

बच्चों की रोज-रोज की पढ़ाई से उत्पन्न एकरसता को दूर करने के लिए हम कभी-कभी भ्रमण का आयोजन करते हैं। इन आयोजनों में हम बच्चों को चिड़ियाघर, गुड़ियाघर, बाल भवन, रेल, म्यूजियम, तारा मंडल, राजघाट आदि स्थानों पर ले जाते हैं। इन स्थानों पर बच्चों को ले जाने के पीछे की हमारी यह सोच रहती है कि बस्ती के बच्चे कहीं बाहर तो जा नहीं पाते, इनको इस तरह के अवसर मिलने ही चाहिए। यह बात काफी हद तक सही भी है कि बच्चे या बड़े भी प्रतिदिन के रोजमर्रा के कामों से ऊब जाते हैं। इसलिए हमें अपने दैनिक कामों में भी कभी-कभी नयापन चाहिए। इसमें एक स्थायित्व आ जाता है । यह स्थायित्व हमारे खुद के विकास के लिए खतरनाक साबित होता है ।

यहां अगर हम बच्चों के संदर्भ में बात करें तो बच्चे भी अपनी रोज-रोज की पढ़ाई से बोर हो जाते हैं । वे खुद ही कहते हैं भैय्या/दीदी कहीं घुमाने ले चलो । यहां बच्चों के मन में तो घूमने वाली बात रहती है । दूसरी तरफ, हम इसे शायद शैक्षिक भ्रमण मानते हैं कि इस बहाने हम बच्चों से कुछ बातचीत करेंगे।

आइए, थोड़ा भ्रमण के स्थान चुनने के बारे में बात करें। इसको हमारे खुद के अनुभव से समझें । इस बार हमने दिल्ली में गौतमपुरी की झुग्गी बस्ती के बच्चों के साथ एक भ्रमण का आयोजन किया तथा उन्हें नेहरू तारा मंडल, रेल म्यूजियम और बच्चों के पार्क ले जाने की योजना बनायी । इस आयोजन में हमारे साथ 70 बच्चे व हम 5 लोग थे । सुबह से ही बच्चों में काफी उत्साह था, कि आज हम घूमने जा रहे हैं । काफी बच्चे समय से पहले नहा-धोकर खाना लेकर आ गये थे।

सबसे पहले हम रेल म्यूजियम गये । वहां गेटकीपर ने हमें बता दिया कि बच्चे किसी मॉडल को न छुयें । कुछ टूट-फूट होने पर हजार रूपये का जुर्माना हो सकता है । बच्चे दे नहीं पायेंगे। हम भी सहम गये और बच्चों को लाइन बनवाते वक्त उन्हें हमने भी समझा दिया कि अंदर कुछ छूना मत, कुछ टूट गया तो हजार रूपये भरने पड़ेंगे । सलीम और विनोद ने भी उसे अपने दोस्तों में इस तरह दुहराया कि कुछ छूना नहीं। हजार रूपये देने पड़ेंगे।

म्यूजियम के अंदर जाते ही बच्चे सब चीजों को जल्दी-जल्दी देखना चाह रहे थे । छोटे बच्चे तो जल्दी-जल्दी बाहर निकलना चाह रहे थे । शायद गाड़ी के पुराने मॉडलों में उनकी कोई रूचि नहीं थी क्योंकि चीजें वहां स्थिर हैं, उछल-कूद नहीं हो रही है । इसको मैंने थोड़ा और समझने का प्रयास किया कि अगर इसी जगह पर बंदर या कुछ जानवर होते तो बच्चे कितने उत्तेजित होते?

कुल मिलाकर मैंने नोट किया कि छोटे बच्चों ने इसमें कम रूचि ली । हां, बड़े बच्चों ने कुछ जानने, समझने की चिंता की। ऐसा मैंने कल्पना (10 वर्ष) के कहने पर महसूस किया कि यहां आज कोई समझाने वाला नहीं है । अब यहां पर हमारी क्या स्थिति हो जाती है ? असल में वह रेलगाड़ी के पुराने मॉडलों से रेलगाड़ी के विकास के बारे में समझना चाहती थी ।

हमें करना तो ये चाहिए कि बच्चों को एक चीज को ध्यान से दिखाकर बात की जाये, जिससे उनकी जानकारियों को विस्तार मिल सके । लेकिन दूसरी तरफ हमारी यह चिंता रहती है कि कहीं बच्चे कुछ नुकसान न कर दें । जिससे भ्रमण का पूरा मजा ही गड़बड़ा जाये। इस तरह से हम 10-15 मिनट में ही रेज म्यूजियम देखकर बाहर आ गये । रेल म्यूजियम से निकलने के बाद बच्चे एक पार्क में आ गये और उन्होंने धमा-चौकड़ी मचानी शुरू कर दी। ये बच्चों के लिए घूमने का असली आनन्द था कि वे पेड़ पर चढ़ रहे हैं, पानी का नल खोल रहे हैं, दौड़-भाग कर रहे हैं । कुछ बच्चों ने अपने खेल चुन लिए हैं और वे उसमें तल्लीन हैं ।

हम भी बैठे हुए अपने घर-परिवार या अपनी दुनिया में खोए हुए हैं । हम भी भ्रमण का आनन्द ले रहे हैं । अब यहां पर हम यह देखें कि बच्चे व हम दोनों ही भ्रमण का आनन्द ले रहे हैं, लेकिन गड़बड़ कहां होती है ? मैं भी कुछ बच्चों को आनन्द लेते हुए देख रहा हूं और बच्चों के बारे में कुछ सोच-समझ रहा हूं । लेकिन होता

क्या है ? इस धमाल में बच्चे फूलों की एक क्यारी में लगी पौध पर भी दौड़-भाग कर देते हैं । माली मुझसे कहता है कि इन बच्चों को गोले में बिठाकर रखो। अब उसे कौन समझाये कि बच्चे की इस खुशी को हम गोले में बिठाकर क्यों छीनें ? हां, बच्चों से बात की जा सकती है कि क्यारी में वह दौड़-भाग न करें ।

रेल म्यूजियम के बाद हम नेहरू तारा मंडल गये । वहां पहले हमने पार्क में बैठकर खाना खाया तथा बच्चों को अमरूद व पतीसा बांटा । इसके बाद बच्चों को फिल्म दिखायी 'जीवन्त ग्रह'। यह फिल्म बच्चों को पृथ्वी की उत्पत्ति के बारे में जानकारी देती है । फिल्म शुरू होने से पहले का थोड़ा सा दृश्य देखें, हाल में अंधेरा हो गया है, फिल्म शुरू होने वाली है । अंधेरा होते ही कुछ बच्चे डर गये, चिल्लाने लगे । कुछ को कहते सुना कि भूकम्प आ गया है, कुछ कह रहे हैं कि कुर्सी हिल रही है । कुछ बच्चों की खुसर-फुसर जारी है । कुछ के लिए सीट नीची है तो वे उस पर घुटनों के बल बैठे हैं । कोई सीटी बजा रहा है, कोई किसी पक्षी-जानवर की आवाज निकाल रहा है । इस तरह की आवाज निकालकर वे शायद यह बताना चाह रहे थे कि अंधेरे या चुप्पी में इस तरह की आवाजें निकालना बेहद अच्छा लगता है । ये मैंने कई बार नोट किया है । ऐसे उदाहरण कक्षा में भी रहे हैं । कक्षा में अगर हम बच्चों को दो मिनट आंख बंद करके चुप रहने को कहें तो कुछ बच्चे इस तरह की आवाजे निकालते हैं ।

फिल्म शुरू होने पर थोड़ी बहुत शांति हुई लेकिन कुछ बच्चों की खुसर-फुसर अंत तक चली रही । आखिर में उद्घोषक को यह कहना पड़ा कि आप थोड़ा चुप रहें तो मैं कुछ समझा पाऊंगा। कुल मिलाकर 45 मिनट की फिल्म में मैं यह सोचता रहा कि इस फिल्म में आये बड़े-बड़े शब्द मेथेन, कार्बोहाइड्रेट, नीहारिका, उल्का पिंड आदि बातें क्या बच्चे समझ पाये होंगे ? क्योंकि जो बच्चे हमारे साथ गये थे वे 6-10 वर्ष के बीच होंगे और दिल्ली नगर निगम के प्राथमिक स्कूल में 5 तक कक्षाएं हैं । इन बच्चों में 60 बच्चे तो अभी पूरी तरह से साक्षर ही नहीं हैं । हां, एक बात मैंने नोट की कि पर्दे पर डायनासोर का आना बच्चों के लिए खुशी देने वाला था । क्योंकि जब पर्दे पर डायनासोर आया तो कई बच्चों के मुंह से निकला 'डायनासोर' ।

बच्चों ने तारा मंडल देखने के बाद पूछना शुरू किया कि अब हम कहां चलेंगे ? तो हमने कहा 'चिल्ड्रेन्स पार्क' । बच्चों को 'चिल्ड्रेन्स पार्क' का मतलब कुछ समझ में नहीं आया । वे कहने लगे चिल्ला-पार्क-चिल्ला पार्क । साथ में कुछ बच्चों ने इसका मतलब यह समझा कि इस पार्क में बहुत चीलें रहती होंगे । उसके बाद हम चिल्ड्रेन्स पार्क पहुंचे । जहां बच्चों ने भ्रमण का असली आनन्द उठाया। पार्क में घुसते ही बच्चे इधर-उधर भागने लगे । कुछ सी-सॉ पर भागे, कुछ फिसलम पट्टी, पर कुछ झूलों पर । यहां पर बच्चों को उछलकूद मचाते हुए देखकर मन में संतोष हुआ कि ये है भ्रमण का असली मतलब जहां बच्चे मस्ती कर रहे हैं और जहां पर हमें उन्हें ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं पड़ती ।

बस, हम बच्चों पर एक नजर रखें कि कहीं किसी को चोट न लग जाये, किसी के बीच मार-पीट न हो जाये या किसी को कहीं जाना हो। पार्क में बच्चों ने डेढ़-दो घंटे जमकर मजा किया। यह मजा शायद हमारे भ्रमण का मकसद होना चाहिए । झूलों पर झूलते हुए बच्चे खुश हो रहे हैं । कुछ बच्चे जिन्हें झूलने से डर लगता है, वे उन्हें झूला रहे हैं । कुछ बच्चे हमसे पूछ रहे हैं कि उन्हे झूला झूलने के लिए पैसे तो नहीं देने पड़ेंगे । यहां उनकी आर्थिक स्थिति आडे आती है कि एक तरफ तो वे मस्ती से झूला झूल रहे हैं, दूसरी तरफ उन्हें यह भी चिन्ता है कि इतनी देर से झूला झूल रहे हैं कहीं इसके पैसे न देने पड़ें ।

इस पूरे भ्रमण में हम यह देखें कि भ्रमण के दौरान बच्चे कुछ न कुछ सिखते हैं । पानी के नल की खोज अपने आप करते हैं, आपको पानी लाकर देते हैं । कुछ बच्चे दूसरे बच्चों पर नजर गड़ाये रहते हैं कि कौन बच्चा कहां गया, कौन बच्चा क्या कर रहा है ? कहीं कोई चीज गुम हो गयी जैसे - बैग, पर्स, थैला, पानी की बोतल आदि तो उसे ढूंढवाने में आपकी मदद करते हैं । यह उनके व्यक्तित्व के विकास का ही एक आयाम है ।

इस तरह के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रमों की अपनी एक अहमियत होती है । ये लगभग सभी स्कूलों में होते हैं, चाहे वह सरकारी स्कूल हों या पब्लिक । लेकिन इसके अंतर्गत हमें कुछ सार्थक उद्देश्य तय करने चाहिए कि हम बच्चों को शैक्षिक भ्रमण के लिए ले जा रहे हैं या केवल घूमने (दोनों भी हो सकते हैं) लेकिन इसकी तैयारी पहले से होनी चाहिए कि बच्चों को कहां ले जायेंगे ? बच्चों की उम्र क्या है ? किसी उम्र के बच्चों के लिए कौन सी जगह उपयोगी रहेगी ? वहां की बातें क्या बच्चों को समझ में आ जायेंगी? बच्चों की संख्या कितनी हो, जिससे हम उन्हें ठीक तरह समझा व बात कर पायें । इन चीजों पर ध्यान देना बेहद जरूरी रहता है ।

कुल मिलाकर ऐसे कार्यक्रम बच्चों की उम्र, योग्यता व रूचि के अनुसार होने चाहिए । केवल घूमना तो सभी बच्चों के साथ आयोजित हो सकता है, जहां पर बच्चे केवल मजा कर सकते हैं। कभी-कभी हम बच्चों को एक नया अहसास देने के लिए भी बाहर ले जाते हैं । वहां पर सीखने-सिखाने की भी बात करते हैं ।

अंत में, मैं अपनी बात मारिया मांटेसरी को उद्धृत करते हुए समाप्त करना चाहूंगा । वे बच्चों को बाहर घुमाने के बारे में अपनी

किताब 'ग्रहणशील मन' में लिखती हैं, ''आजकल स्कूल में काम से राहत दिलाने के लिए बच्चों को बाहर घूमाने ले जाते हैं जहां वे नई चीजें देखें और खोजें । परंतु इसे शिक्षा का एक नियमित अंग बनाना चाहिए और बहुत छोटी आयु में बच्चों को बाहर ले जाना चाहिए । सब बच्चों को इसी ढंग से घूमने का मौका मिलना चाहिए जिससे वे अपनी इच्छानुसार विचरण कर सकें ।''